M.A. (Paper-9), Semester-5

Topic:- Expansion of Maratha Kingdom under Peshwas and Maratha Confederacy

भूमिका :—

छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा स्थापित मराठा राज्य 18वीं शताब्दी में पेशवाओं के नेतृत्व में एक विशाल साम्राज्य के रूप में विकसित हुआ।

शिवाजी के बाद प्रशासनिक सत्ता कमजोर पेशवाओं के हाथों में केन्द्रित होती गई और मराठा शक्ति ने दक्षिण से निकलकर उत्तर भारत तक अपना प्रभाव स्थापित किया।

→ पेशवा पद का उदय :—

- पेशवा मूलतः प्रधानमंत्री का पद था।
- बालाजी विश्वनाथ (1713-1720) के समय से यह पद वास्तविक सत्ता का केन्द्र बन गया।
- मुगल साम्राज्य की कमजोरी और क्षेत्रीय शक्तियों के उदय ने मराठों को विस्तार का अवसर दिया।

→ प्रमुख पेशवाओं के अधीन विस्तार :—

1. बालाजी विश्वनाथ (1713-1720)
   - मुगल सम्राट फर्रुखसियर से 1719 में संधि।
   - दक्कन के 6 सूबों से चौथ और सरदेशमुखी वसूलने का अधिकार प्राप्त।
   - मराठों को मुगल राजनीति में निर्णायक शक्ति बनाया।

महत्व :— मराठा शक्ति को वैधता और आर्थिक आधार मिला।

2. बाजीराव प्रथम (1720-1740)

बाजीराव प्रथम को मराठा विस्तार का वास्तविक शिल्पी माना जाता है।

मुख्य उपलब्धियाँ :

- मालवा पार कर उत्तर भारत में प्रवेश।

Scanned with OKEN Scanner

· मालवा, बुंदेलखंड और गुजरात पर अधिकार।
· 1737 में दिल्ली तक आक्रमण।
· निजाम को पराजित कर दक्कन में प्रभुत्व स्थापित।

नीति:– "दिल्ली-चलो" की नीति – मुगल साम्राज्य की जड़ पर प्रहार।

महत्व: मराठा शक्ति को अखिल भारतीय स्वरूप दिया।

3. बालाजी बाजीराव (नाना साहेब) 1740-1761:—

बालाजी बाजीराव के समय मराठा साम्राज्य अपने चरम पर पहुँचा।

विस्तार:—
· बंगाल, उड़ीसा और बिहार में प्रभाव।
· राजपूताना पर नियंत्रण।
· 1752 की संधि – मुगल सम्राट की सुरक्षा का दायित्व।
· पंजाब तक मराठा सेना का प्रवेश (1758)।

चरम विस्तार:
मराठा प्रभाव क्षेत्र अटक से कटक तक फैल गया।

→ पानीपत का तृतीय युद्ध:—
· मराठों और अहमद शाह अब्दाली के बीच युद्ध।
· मराठों की पराजय।

परिणाम:
· उत्तर भारत में मराठा प्रभुत्व को आघात।
· पेशवा बालाजी बाजीराव की मानसिक आघात से मृत्यु।
· मराठा संघ में विघटन की शुरुआत।

Scanned with OKEN Scanner